एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

Scanned by CamScanner

भाग-64

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

****

षष्ठ पत्र

****

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

****

Scanned by CamScanner

निबंध-'अशोक के फूल'

****

आज जिसे हम बहुमूल्य संस्कृति मान रहे हैं, क्या ऐसी ही बनी रहेगी? सम्राटों सामंतों ने जिस आचार-निष्टा को इतना मोहक और मादक रूप दिया था, वह लुप्त हो गई, धर्माचार्यों ने जिस ज्ञान और वैराग्य को इतना महार्ध समझा था, वह समाप्त हो गया, मध्ययुग के मुसलमान रईसों के अनुकरण पर जो रस राशि उमड़ी थी, वह वाष्प की भाँति उड़ गई तो क्या यह मध्य युग के कंकाल में लिखा हुआ व्यावसायिक युग का कमल ऐसा ही बना रहेगा? महाकाल के प्रत्येक पदाघात में धरती धसकेगी। उसके कुंठनृत्य

Scanned by CamScanner

की प्रत्येक चारिका कुछ-न-कुछ लपेटकर ले जाएगी। सब बदलेगा। सब विकृत होगा - सब नवीन बनेगा।

भगवान बुद्ध ने मार-विजय के बाद वैरागियों की पलटन खड़ी की थी। असल में 'मार' मदन का ही नामांतर है। कैसा मधुर और मोहक साहित्य उन्होंने दिया। पर न जाने कब यक्षों के वज्रपाणि नामक देवता इस वैराग्यप्रवण धर्म में घुसे और बोधिसत्वों के शिरोमणि बन गए। फिर वज्रयान का अपूर्व धर्म-मार्ग प्रचलित हुआ। त्रिरत्नों में मदन देवता ने आसन पाया। वह एक अजीब आँधी थी। इसमें बौद्ध बह गए, शैव बह गए, शाक्त बह गए। उन दिनों 'श्री सुंदरी साधनतत्पराणां योगश्च करस्थ एवं' की महिमा प्रतिष्ठित हुई। काव्य और शिल्प के मोहक अशोक ने

Scanned by CamScanner

अभिचार में सहायता दी। मैं अचरज से इस योग और भोग की मिलन लीला को देख रहा हूँ। यह भी क्या जीवनी शक्ति का दुर्दम अभियान था। कौन बताएगा कि कितने विध्वंस के बाद इस अपूर्व धर्म मत की सृष्टि हुई थी? अशोक-स्तबक का हर फूल और हर दल इस विचित्र परिणति की परंपरा ढोए आ रहा है। कैसा झबरा सा गुल्म है।

(शेष भाग-65 में...)

Scanned by CamScanner